Madine Ki Barkaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 266
Weekly Booklet : 266

सफ़हात 18

मदीने की बरकतें

03 यसरिब को तयबा बनाने वाले

04 जब बुख़ार ने हुज़ूर से इजाज़त मांगी

ख़ाके मदीना की बरकतें 10

हज़रते अबू हुरैरा का ग़मनाक ख़्वाब 13

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

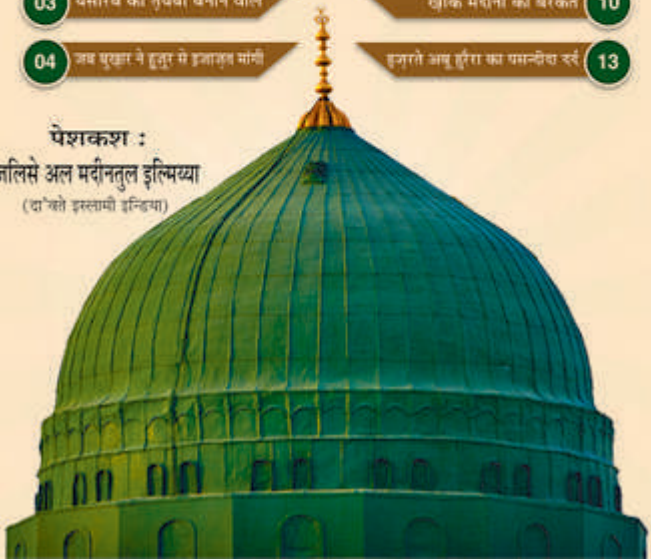

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **मदीने की बरकतें**
सिने त़बाअ़त : **1444** हि., **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**मदीने की बरकतें**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मदीने की बरकतें

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला : "**मदीने की बरकतें**" पढ़ या सुन ले, उसे अपने प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का पाबन्द बना और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ का परचा काम आ गया (वाक़िआ़)

क़ियामत के दिन किसी मुसल्मान की नेकियां मीज़ान (या'नी तराज़ू) में हलकी हो जाएंगी तो गुनाहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक परचा अपने पास से निकाल कर नेकियों के पलड़े में रख देंगे, तो उस से नेकियों का पलड़ा वज़्नी हो जाएगा। वोह अ़र्ज़ करेगा : मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप कौन हैं ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाएंगे : मैं तेरा नबी मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं और येह तेरा वोह दुरूद है जो तू ने मुझ पर भेजा था।

(موسوعہ ابن ابی دنیا، 92/1، حدیث: 79 ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

आ़शिक़े अक्बर की ख़िदमत में बुख़ार की ह़ाज़िरी

बुख़ारी शरीफ़, ह़दीस नम्बर 3926 में है : तमाम मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान, ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत (Migrate) फ़रमा कर मदीनए

पाक तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और (मुअज़्ज़िने रसूल) ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को बुख़ार हो गया। मैं इन दोनों के पास आई और मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम से अ़र्ज़ की : "अब्बूजान ! आप कैसा मह़सूस फ़रमा रहे हैं ?" आप येह शे'र पढ़ते :

كُلُّ امْرِئٍ مُصَبَّحٌ فِيْ اَهْلِهٖ وَالْمَوْتُ اَدْنٰى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهٖ

तरजमा : हर शख़्स अपने घर वालों के दरमियान सुब्ह़ करता है। जब कि मौत उस के जूते के तस्मे से ज़ियादा क़रीब होती है।

और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ यूं कहते :

तरजमा : ﴿1﴾ काश ! मैं फिर कभी एक रात (मक्के की) वादी में गुज़ारूं और मेरे इर्द गिर्द इज़्ख़िर और जलील नामी घास हो। ﴿2﴾ काश ! फिर एक रोज़ (मक्के में) मजन्ना नामी मक़ाम के चश्मे पर जाऊं और शाम्मा और त़फ़ील नामी पहाड़ियां देखना नसीब हों।

ह़ज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : जब मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बारे में अ़र्ज़ किया तो आप ने यूं दुआ फ़रमाई : "اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ اِلَيْنَا الْمَدِيْنَةَ كَحُبِّنَا مَكَّةَ اَوْ اَشَدَّ،وَصَحِّحْهَا وَبَارِكْ لَنَا فِيْ صَاعِهَا وَ مُدِّهَا وَانْقُلْ حُمَّاهَا فَاجْعَلْهَا بِالْجُحْفَةِ या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! तू मदीने को भी हमारे लिये मक्के की त़रह़ प्यारा बना दे बल्कि उस से भी ज़ियादा और हमारे लिये मदीने को सिह़्ह़त अफ़्ज़ा बना दे। हमारे लिये यहां के साअ़ और मुद (या'नी नापतोल के पैमानों) में भी बरकत अ़त़ा फ़रमा और बुख़ार को यहां से जुह़फ़ा (एक मक़ाम का नाम) की त़रफ़ मुन्तक़िल फ़रमा।"

(بخاری،2/601،حدیث:3926)

मदीना इस लिये अ़त्तार जानो दिल से है प्यारा
कि रहते हैं मेरे आक़ा मेरे सरवर मदीने में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

यसरिब को त़यबा बनाने वाले

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पहले, मदीनए मुनव्वरह वबाओं और बीमारियों का घर था, आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के क़दमे पाक ने वहां से वबाओं (या'नी बीमारियों) को निकाल कर वहां की मिट्टी को भी शिफ़ा बना दिया, (प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : हमारे मदीने की मिट्टी बीमारों को शिफ़ा देती है। (وفاء الوفاء، 1/69, मिरआतुल मनाजीह़, 2/178)

बिरादरे आ'ला ह़ज़रत, मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं :

न हो आराम जिस बीमार को सारे ज़माने से उठा ले जाए थोड़ी ख़ाक उन के आस्ताने से

मदीने को अब यसरिब नहीं कह सकते

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मदीनए त़य्यिबा को यसरिब कहना ना जाइज़ व मम्नूअ़ व गुनाह है और कहने वाला गुनाहगार। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो मदीने को यसरिब कहे उस पर तौबा वाजिब है। मदीना त़ाबह है, मदीना त़ाबह है।

(مسند امام احمد، 6/409، حدیث:18544, फ़तावा रज़विय्या, 21/116)

अ़ल्लामा मुनावी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि मदीनए त़य्यिबा का यसरिब नाम रखना ह़राम है कि यसरिब कहने से इस्तिग़्फ़ार का हुक्म फ़रमाया और इस्तिग़्फ़ार गुनाह ही से होती है। (التیسیر شرح جامع الصغیر، 2/424)

इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने अपनी तारीख़ में फ़रमाय कि जो मदीने को एक बार "यसरिब" कहे वोह बत़ौरे कफ़्फ़ारा दस बार

''मदीना'' कहे । (تاریخ کبیر، 6/62، حدیث:8282) ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मौलाना जमीलुर्रह़मान रज़वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपनी ना'तिया किताब ''क़बालए बख़्शिश'' में कितने ख़ूब सूरत अन्दाज़ में ज़िक्रे मदीना फ़रमाते हैं :

या रब मेरे दिल में है तमन्नाए मदीना इन आंखों से दिखला मुझे सह़राए मदीना
क्यूं त़यबा को यसरिब कहूं मम्नूअ़ है क़त्अ़न मौजूद हैं जब सेंकड़ों अस्माए मदीना
याद आता है जब रौज़ए पुरनूर का गुम्बद दिल से येह निकलती है सदा हाए मदीना
ऐसा मेरी नज़रों में समा जाए मदीना जब आंख उठाऊं तो नज़र आए मदीना
बुलवा के मदीने में जमीले रज़वी को
सग अपना बना लो इसे मौलाए मदीना

(क़बालए बख़्शिश, स. 233, 235)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बुख़ार ने इजाज़त मांगी

ह़ज़रते बीबी उम्मे त़ारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के हां तशरीफ़ लाए और घर में दाख़िल होने की इजाज़त त़लब फ़रमाई, (सलाम किया) ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ामोश रहे, दोबारा ऐसा हुवा फिर ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ामोश रहे, जब तीसरी बार भी ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ामोश रहे तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले जाने लगे तो ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मुझे भेजा और फ़रमाया : मुझे (हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को) जवाब देने से किसी चीज़ ने नहीं रोका बल्कि मैं येह चाहता था की आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम पर मज़ीद सलाम इर्शाद फ़रमाएं (या'नी मज़ीद सलामती की दुआ से नवाज़ें),[1] फिर ह़ज़रते बीबी उम्मे

1... येह घर में दाख़िले की इजाज़त का सलाम था इस का जवाब वाजिब नहीं ।

तारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : इतने में मैं ने दरवाज़े पर आवाज़ सुनी कि कोई अन्दर आने की इजाज़त मांग रहा है लेकिन नज़र नहीं आ रहा, **अल्लाह** पाक की अ़ता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तू कौन है ? उस ने अ़र्ज़ किया : मैं उम्मे मिल्दम हूं (येह बुख़ार की कुन्यत है) । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें कोई ख़ुश आमदीद नहीं, तुम क़ुबा वालों की त़रफ़ चले जाओ। उस ने अ़र्ज़ की : जी ठीक। फिर वोह उन की त़रफ़ चला गया। (دلائل النبوہ للبیہقی،6/158) एक रिवायत में है कि जब आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से पूछा तू कौन है ? तो उस ने अ़र्ज़ किया : मैं बुख़ार हूं, गोश्त खाता और ख़ून पीता हूं। (فیض القدیر،2/231،حدیث:1617)

(येह बुख़ार क़ुबा वालों पर छे दिन और छे रातें रहा) उन ह़ज़रात ने **अल्लाह** पाक के रह़मत वाले नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बुख़ार के बारे में अ़र्ज़ किया और उन का ह़ाल येह था कि उन के चेहरे ज़र्द (या'नी पीले) हो चुके थे, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** पाक से दुआ करूं कि वोह इसे तुम से दूर फ़रमा दे और अगर तुम चाहो तो इसे रहने दो येह तुम्हारे बक़िय्या गुनाह झाड़ देगा। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फिर इसे रहने दीजिये। (الترغیب والترہیب،4/153،حدیث:81)

ग़ुलामों की इयादत

ग़मज़दों के ग़म दूर करने वाले ख़ुश अख़्लाक़ आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (क़ुबा वालों के अ़र्ज़ करने पर) एक एक कर के उन के घर में दाख़िल होते और उन के लिये आ़फ़ियत की दुआ फ़रमाते, जब आप वापस तशरीफ़

लाने लगे तो उन में से एक औरत आप के पीछे आई और अ़र्ज़ की : आप को उस ख़ुदाए पाक की क़सम जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर भेजा है ! मैं भी अन्सार में से हूं आप मेरे लिये भी वैसी ही दुआ़ फ़रमाइये जैसे अन्सार (सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان) के लिये फ़रमाई है । आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अगर चाहो तो मैं तुम्हारे लिये दुआ़ करूं कि **अल्लाह** पाक तुम्हें आ़फ़ियत अ़त़ा फ़रमाए और अगर चाहो तो सब्र करो तो तुम्हारे लिये जन्नत है। इस पर उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं सब्र करती हूं और मैं जन्नत पर किसी शै को तरजीह़ नहीं देती। (الادب المفرد، ص 132، حدیث: 502)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा दुल्हन बन के निकली दुआ़ए मुह़म्मद
इजाबत ने झुक कर गले से लगाया बढ़ी नाज़ से जब दुआ़ए मुह़म्मद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 66)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ग़ौसे आ'ज़म ने बुख़ार को भगा दिया

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! **अल्लाह** पाक ने हमारे ग़ौसे आ'ज़म ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ को बे शुमार कमालात से नवाज़ा है चुनान्चे आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की ख़िदमत में अबुल मआ़ली अह़मद मुज़फ़्फ़र बिन यूसुफ़ बग़दादी ह़म्बली आए और कहने लगे कि मेरे बेटे "मुह़म्मद" को पन्दरह महीने से बुख़ार हो रहा है। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : जा कर उस के कान में कह दो "ऐ उम्मे मिल्दम (येह बुख़ार की कुन्यत है) ! तुम से अ़ब्दुल क़ादिर (رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ) फ़रमाते हैं : मेरे बेटे

से निकल जाओ ।" उन्हों ने कहा कि जिस त़रह़ मुझे शैख़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने हुक्म दिया था, मैं ने इसी त़रह़ कहा तो उस दिन के बा'द कभी बुख़ार नहीं आया । बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में रहने वालों ने उन से दो साल के बा'द बच्चे के बुख़ार के बारे में पूछा तो बताया कि उस दिन से बुख़ार कभी लौट कर न आया । (بہجۃ الاسرار، ص153)

बोलबाला है तेरा ज़िक्र है ऊंचा तेरा   وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ का है साया तुझ पर

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 28)

बुख़ार और त़ाऊ़न

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पास बुख़ार और त़ाऊ़न ले कर आए, मैं ने बुख़ार मदीने में रोक लिया और त़ाऊ़न को शाम की त़रफ़ भेज दिया । लिहाज़ा त़ाऊ़न मेरी उम्मत के लिये शहादत और काफ़िर पर अ़ज़ाब है । (مسند امام احمد، 7/393، حدیث:20793)

दो रिवायतों में मुनासबत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मस्जिदे क़ुबा शरीफ़ अब मदीनए पाक में दाख़िल है जब कि पहले मस्जिदे क़ुबा मदीनए पाक में शामिल न थी, ऊपर बयान की गई ह़दीसे पाक और इस रिवायत में मुनासबत बयान करते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं : (एक रिवायत में है बुख़ार को मदीने से क़ुबा की त़रफ़ भेज दिया और दूसरी रिवायत में है कि बुख़ार को मदीने में रोक लिया) यहां अह़ादीस में तत़्बीक़ (या'नी मुनासबत बयान करना) ज़रूरी है क्यूं कि ब ज़ाहिर येह ह़दीस पहले वाली ह़दीस के मुख़ालिफ़ है, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

मुझ पर यहां दो बातें ज़ाहिर हुईं : ﴾1﴿ सब से पहले जब नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए पाक तशरीफ़ लाए और अपनी मुबारक दुआ से बुख़ार को ''जुह़फ़ा'' और ''ख़म'' की त़रफ़ मुन्तक़िल फ़रमा दिया तो इस का जवाब येह है कि जब जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने इन दोनों बीमारियों को हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर पेश किया तो ज़रूरी था कि मदीनए पाक में कोई एक बाक़ी रहे तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बुख़ार को इख़्तियार फ़रमाया और त़ाऊ़न को शाम की त़रफ़ भेज दिया क्यूं कि बुख़ार का नुक़्सान त़ाऊ़न के मुक़ाबले में कम है इसी लिये बुख़ार मदीनए पाक ह़ाज़िर हुवा और बेशक रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल शरीफ़ से क़ब्ल बुख़ार ने ह़ाज़िरी दी थी और उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا को वाक़िअए इफ़्क में बुख़ार हो गया था और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की बारगाहों में भी बुख़ार ने ह़ाज़िरी दी लेकिन त़ाऊ़न कभी किसी वक़्त (मदीने में) नहीं आया येही वज्ह मेरे नज़्दीक ज़ियादा मज़बूत़ है। ﴾2﴿ और दूसरी वज्ह मेरे नज़्दीक येह है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस बुख़ार को मदीनए पाक से दूर फ़रमा दिया था वोह एक ख़ास क़िस्म का बुख़ार था जो बहुत शदीद हलाक कर देने वाला था इस को जुह़फ़ा की त़रफ़ मुन्तक़िल फ़रमा दिया न कि मुकम्मल त़ौर पर बुख़ार को दूर फ़रमा दिया था।

(کشف المغمی فی فضل الحمی، ص5-6 ملخصًا)

जुह़फ़ा कहां है ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जुह़फ़ा मक्का व मदीना के दरमियान शाम की जानिब है। जुह़फ़ा के मा'ना हैं

सैलाब का बहाव, यहां एक दफ़्आ़ ज़बर दस्त सैलाब आया था इस लिये जुह़फ़ा नाम हुवा, अस्ली नाम "मह्यआ़" है इसे "मह्यआ़" नामी एक शख़्स ने आबाद किया था। (مرقات المفاتیح، 5/390، تحت الحدیث:2516)

काले रंग वाली औ़रत

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी जन्नती इब्ने जन्नती ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए पाक के बारे में ख़्वाब देखा और फ़रमाया : मैं ने एक काली, बिखरे बालों वाली औ़रत देखी कि मदीने से निकली ह़त्ता कि मह्यआ़ में उतर गई, मैं ने इस की ता'बीर येह की, कि मदीनए मुनव्वरह की वबा मह्यआ़ की त़रफ़ मुन्तक़िल हो गई, मह्यआ़ जुह़फ़ा का नाम है। (بخاری، 4/422، حدیث:7039)

एक रिवायत में है कि एक शख़्स मक्के से मदीने आया तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने रास्ते में किसी को देखा है ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : एक काले रंग की औ़रत को। इर्शाद फ़रमाया : वोह बुख़ार था और वोह आज के बा'द कभी लौट कर (मदीने में) नहीं आएगा। (شرح الزرقانی علی موطا، 4/309، تحت الحدیث:1714)

बा बरकत बुख़ार

इमाम सम्हूदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अभी जो बुख़ार मदीनए पाक में मौजूद है येह बीमारी वाला बुख़ार नहीं है बल्कि येह हमारे रब की रह़मत है और हमारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ की वज्ह से गुनाहों को मिटाने वाला है। (فیض القدیر، 4/14، تحت الحدیث:4388)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब मदीनए पाक तशरीफ़ लाए तो हमारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी

आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا और कई सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को बुख़ार हो गया, सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सरकारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक दुआ का येह असर हुवा कि आज पूरे अरब शरीफ़ बल्कि यूं कहिये कि पूरी दुन्या में आबो हवा समेत हर तरह से मदीनए मुनव्वरह "बेहतरीन जगह" है। बल्कि यहां की तो मिट्टी में भी शिफ़ा व बरकत है।

ख़ाके मदीना की बरकतें

"जज़्बुल क़ुलूब" में है : **अल्लाह** पाक ने मदीनए पाक की मिट्टी और फलों में शिफ़ा रखी है और कई अहादीसे मुबारका में आया है, ख़ाके मदीना में हर मरज़ से शिफ़ा है और बा'ज़ अहादीसे मुबारका में "مِنَ الْجُذَامِ وَ الْبَرَصِ" या'नी कोढ़ और फुल बहरी (या'नी बरस) से शिफ़ा का ज़िक्र है और बा'ज़ "अख़्बार" में मदीने के एक ख़ास मक़ाम "सुऐबा" (अवाम इस जगह को "ख़ाके शिफ़ा" बोलते हैं) का तज़्किरा है बा'ज़ रिवायात में है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बा'ज़ सहाबा को हुक्म फ़रमाया कि वोह इस ख़ाक से बुख़ार का इलाज करें। बुज़ुर्गों से इस ख़ास मक़ाम "सुऐबा" की ख़ाक मुबारक से इलाज की हिकायात भी मिलती हैं। (جذب القلوب، ص27 ملخصاً)

इमाम इब्ने बत्ताल رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जो मदीनए पाक में रहे वोह इस की मिट्टी और बाग़ात में ऐसी ख़ुश्बू पाएगा जो इस के इलावा और कहीं नहीं होती। (شرح الزرقانی علی موطا، 4/308، تحت الحدیث:1714)

कोड़ियों कोढ़ियों के लिये कोढ़ दूर अच्छा चंगा वोह ख़ासा भला कर चले

साल भर का बुख़ार एक दिन में जाता रहा

ह़ज़रते शैख़ मज्दुद्दीन फ़ीरोज़आबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा ग़ुलाम साल भर से बुख़ार में मुब्तला था, मैं ने (मक़ामे सुऐ़ब या'नी "ख़ाके शिफ़ा" से) ख़ाके मदीना ली और पानी में (थोड़ी सी) घोल कर पिलाई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! उसी दिन शिफ़ायाब हो गया । (جذب القلوب، ص27) (अफ़्सोस ! वोह मुबारक जगह अब छुपा दी गई है, बसा अवक़ात उ़श्शाक़ खोद कर "ख़ाके शिफ़ा" ह़ासिल कर लेते हैं, मगर इन्तिज़ामिया डामर वग़ैरा डाल कर फिर से बन्द कर देती है ।)

ऐ ख़ाके मदीना ! तेरा कहना क्या है
तुझे कुर्बे शाहे मदीना मिला है
शरफ़ मुस्त़फ़ा के क़दम चूमने का
तुझे बारहा ख़ाके त़यबा मिला है
मुअ़त्त़र है कितनी तू ख़ाके मदीना
कि ख़ुश्बूओं से ज़र्रा ज़र्रा बसा है
लगाओ तुम आंखों में ख़ाके मदीना
कोई इस से बेहतर भी सुरमा भला है !
मरीज़ो ! उठा कर के ख़ाके मदीना
को ले जाओ ! इस में यक़ीनन शिफ़ा है
मदीने की मिट्टी ज़रा सी उठा कर
पियो घोल कर हर मरज़ की दवा है
अ़क़ीदत से ख़ाके मदीना बदन पर
मलो तुम हर इक दर्द की येह दवा है
हमें मौत ख़ाके मदीना पर आए
इलाही ! येह तुझ से हमारी दुआ़ है
मेरी ना'श पर आप ख़ाके मदीना
छिड़कना मेरे साथियो ! इल्तिजा है
पसे मर्ग मौला तू मिट्टी हमारी
मिला ख़ाके त़यबा में येह इल्तिजा है

बदन पर है अ़त्त़ार के ख़ाके त़यबा
परे हट जहन्नम तेरा काम क्या है

(वसाइले बख़्शिश, स. 465)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से मदीना शरीफ़ बा बरकत बना, यहां का मोहलिक बुख़ार दूर हुवा और येह शह्र "सलामती वाला शह्र" बना, अलबत्ता उ़मूमी बुख़ार व बीमारी को मदीने में रहने दिया क्यूं कि येह **अल्लाह** पाक की रह़मत से गुनाह मिटाते और दरजात में इज़ाफ़ा करते हैं। येही वज्ह है कि बा'ज़ सह़ाबए किराम ने बुख़ार के फ़ज़ाइल सुन कर तमन्ना की, कि उन्हें भी येह फ़ज़ीलत ह़ासिल हो।

बुख़ार मांग लिया

ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, कि "बुख़ार का अज्रो सवाब क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : जब तक बुख़ार में मुब्तला शख़्स के पाउं लड़खड़ाते रहते हैं और वोह पसीने में शराबोर रहता है उसे नेकियां मिलती रहती हैं। येह सुन कर मैं ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की : "ऐ परवर्दगार ! मैं तुझ से ऐसे बुख़ार का सुवाल करता हूं जो मुझे तेरी राह में जिहाद करने, तेरे घर का ह़ज करने और नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मस्जिदे नबवी में जाने से रुकावट न बने।" रावी कहते हैं : "आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की येह दुआ़ ऐसी मक़्बूल हुई कि इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को हर वक़्त बुख़ार ही रहता था।"

(معجم کبیر، 1/200، حدیث:540)

हमेशा बुख़ार में रहने की दुआ़

जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इर्शाद फ़रमाया : "बुख़ार गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।" तो ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने हमेशा बुख़ार में रहने की दुआ़ की। चुनान्चे इन्तिक़ाल फ़रमाने तक आप

رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पर बुख़ार की कैफ़िय्यत त़ारी रही (قوت القلوب، 2/49) चन्द अन्सारी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने भी येही दुआ़ की तो उन पर भी (इन्तिक़ाल फ़रमाने तक) बुख़ार की कैफ़िय्यत त़ारी रही। (قوت القلوب، 2/49)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

बुख़ार और सर दर्द का सवाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : एक शख़्स को दर्दे सर और बुख़ार होता है और उस के गुनाह उ़ह़ुद पहाड़ जितने होते हैं, फिर जब येह उस से जुदा होते हैं तो उस के गुनाहों में से एक ज़र्रा भी बाक़ी नहीं होता।

(شعب الایمان، 7/176، حدیث:9903)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : दीगर बीमारियां एक या दो उ़ज़्व को होती हैं मगर बुख़ार सर से पाउं तक हर रग में असर करता है, लिहाज़ा येह सारे जिस्म की ख़त़ाओं और गुनाहों को मुआ़फ़ कराएगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/413 ब तग़य्युर)

एक रिवायत में है : बन्दए मोमिन बीमारी में मुब्तला रहता है यहां तक कि येह बीमारी उसे गुनाहों से पाक कर देती है।

(شعب الایمان، 7/166، حدیث:9863)

पसन्दीदा दर्द

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे बुख़ार के दर्द से ज़ियादा कोई दर्द पसन्दीदा नहीं क्यूं कि येह आदमी के हर जोड़ में दाख़िल होता है और बेशक **अल्लाह** पाक इस का अज्र जिस्म के हर उ़ज़्व

को उस के दर्द की मिक़्दार बराबर अ़ता फ़रमाता है।

(مصنف ابن ابی شیبہ، 7/99، حدیث:10922)

दस दिन बुख़ार में रहने वाले की शान

एक और रिवायत में है : जिस को तीन रात बुख़ार रहा वोह गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसा जिस दिन अपनी मां के पेट से निकला था और जिस को दस दिन बुख़ार रहा तो आस्मान से ए'लान किया जाता है बेशक तेरे पिछले गुनाहों को बख़्श दिया गया, अपना अ़मल दोबारा शुरूअ़ कर। (کنز العمال، جزء:3، 2/132، حدیث:6766)

ग़ौसे पाक का मुरीद बनने में देर न करें

चन्द साल पहले का वाक़िआ़ है एक नौ जवान आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया, चन्द दिन बा'द उस की शादी थी कि उसे बुख़ार ने आ लिया, बहर ह़ाल जैसे तैसे शादी हो गई। वलीमे की तक़रीब में भी वोह बेचारा बीमार ही था। शादी के पांच या सात दिन के बा'द क़ज़ाए इलाही से उस का इन्तिक़ाल हो गया। उस वक़्त दा'वते इस्लामी का चेनल नहीं था, अमीरे अहले सुन्नत के ऑडियो बयानात की केसिटें मक्तबतुल मदीना पर हदिय्यतन दस्त याब होती थीं। वोह नौ जवान अमीरे अहले सुन्नत के बयानात ब कसरत सुना करता और आख़िरी वक़्त में भी अमीरे अहले सुन्नत का बयान चलाता था, अमीरे अहले सुन्नत उस के घर वालों से ता'ज़ियत के लिये तशरीफ़ ले गए तो घर के अफ़राद ने बताया कि येह आप का बयान बार बार सुनता और आप के ज़रीए हुज़ूरे ग़ौसे पाक शैख़

अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का मुरीद होने के लिये पुकारता रहा फिर कलिमा व इस्तिग़फ़ार और तौबा कर के उस ने दम तोड़ दिया। (ऑडियो बयान : चार मदनी फूल) **अल्लाह** करीम मर्हूम की बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का मुरीद बनने में नुक़्सान का कोई पहलू नहीं, फ़ाएदा ही फ़ाएदा है कि **अल्लाह** वालों की निस्बत दुन्या और आख़िरत में फ़ाएदा पहुंचाती है। हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के सिल्सिले में शामिल होने की बरकात का मुत़ालआ़ करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत का रिसाला "मुन्ने की लाश" पढ़िये। अलबत्ता आप की तरग़ीबो तह़रीस के लिये ग़ौसे पाक के एक मुरीद की ऐसी मदनी बहार पेश की जाती है कि पढ़ कर आप झूम उठेंगे, اِنۡ شَآءَ اللّٰہ الۡکَرِیۡم ।

ग़ौसो रज़ा के दीवाने की मदनी बहार

एक अ़लाक़े में ग़ौसे पाक का एक दीवाना रहा करता था जिस का नाम "ग़ुलाम नबी क़ादिरी" था, वोह मस्लके आ'ला ह़ज़रत और ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की निस्बत पर बड़ा मज़बूत़ था। एक बार उस के अ़लाक़े में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के सुन्नतों भरे बयान के सिल्सिले में इज्तिमाअ़ था। ग़ुलाम नबी क़ादिरी बुख़ार की ह़ालत में गाड़ियों में जा जा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचा रहा था। जब बयान का वक़्त आया तो वोह चादर ओढ़ कर बयान में बैठ गया। दो दिन बा'द अमीरे अहले सुन्नत को इत्तिलाअ़ मिली कि उस दीवाने का इन्तिक़ाल हो

गया है। आप आधी रात को उस के घर तशरीफ़ ले गए, अमीरे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं : मैं ने कई मय्यितें देखी हैं मगर इस क़दर बा रौनक़ व रोशन चेहरा कभी नहीं देखा, फूल की त़रह़ खिला हुवा नूरानी चेहरा जैसे अभी अभी सोया है। कई आ़शिक़ाने रसूल का बयान है कि लगता ही नहीं कि येह कोई मय्यित है बल्कि ऐसे आराम से लैटा हुवा है जैसे सो रहा हो। उस की मय्यित के इर्द गिर्द इस्लामी भाई ना'तें पढ़ रहे थे। अमीरे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं : ऐसा लगता है वोह बाज़ी जीत गया है। **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उस पर रह़मत हो और उस के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

तुम्हें लुत़्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माह़ोल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰه तुम अपनाए रखखो सदा मदनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

फ़रमाने आख़िरी नबी ﷺ

मुझे एक ऐसी बस्ती की तरफ़ (हिजरत का) हुक्म हुवा जो तमाम बस्तियों को खा जाएगी (या'नी सब पर ग़ालिब आएगी) लोग उसे "यसरिब" कहते हैं और वोह मदीना है, (येह बस्ती) लोगों को इस तरह पाको साफ़ करेगी जैसे भट्टी लोहे के मैल को।

(بخاری، 1/617، حدیث:1871)